(iv) वीर रस — स्थायी भाव है उत्साह। आलम्बन शत्रु, दीन, याचक, तीर्थ, पर्व आदि। इसके मुख्यतः चार भेद हैं — युद्धवीर, धर्मवीर, दानवीर और दयावीर। यहाँ युद्धवीर का उदाहरण/दृष्टान्त है —

"अमर्त्य वीर पुत्र हो
दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पन्थ है
बढ़े चलो, बढ़े चलो।"

(v) रौद्र रस — जहाँ अपमान, गुरुजनों की निन्दा, विरोधी, शत्रु द्वारा छेड़खानी आदि से प्रतिशोध की भावना जाग्रत होती है, वहाँ रौद्र रस होता है। इसका स्थायी भाव क्रोध है।

(vi) भयानक रस — भयप्रद वस्तु को देखने या प्रबल शत्रु के आक्रमण से हृदय में वर्तमान स्थायी भाव भय जब पुष्ट होकर व्यक्त होता है तो उसे भयानक रस कहते हैं।

(vii) बीभत्स रस — घृणित वस्तु को देखने, सुनने से जहाँ जुगुप्सा स्थायी की परिपुष्टि हो वहाँ बीभत्स रस होता है।

(viii) अद्भुत रस — विचित्र वस्तु देखने से उत्पन्न आश्चर्य स्थायी भाव जब अपने परिपुष्टि में उपस्थित होता है तो वहाँ अद्भुत रस होता है।